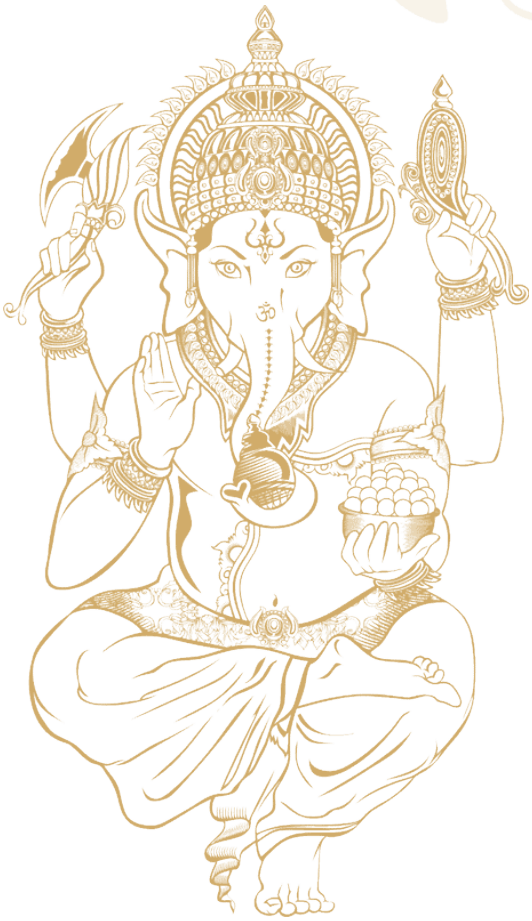

Mr.KAUSHIK PRAKASH

24 Jan 1989

11:32 AM

Hajipur

Model: Web-MyKundli

Order No: 119102001

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**24/01/1989**
दिन	मंगलवार
जन्म समय	**11:32:00 घंटे**
इष्ट	12:19:52 घटी
स्थान	**Hajipur**
राज्य	Bihar
देश	India

अक्षांश	25:41:00 उत्तर
रेखांश	85:13:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	00:10:52 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	11:42:52 घंटे
वेलान्तर	-00:12:06 घंटे
साम्पातिक काल	19:57:02 घंटे
सूर्योदय	06:36:03 घंटे
सूर्यास्त	17:26:38 घंटे
दिनमान	10:50:35 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	शिशिर
सूर्य के अंश	10:31:39 मकर
लग्न के अंश	15:02:18 मेष

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	मेष - मंगल
राशि-स्वामी	**सिंह - सूर्य**
नक्षत्र-चरण	**मघा - 3**
नक्षत्र स्वामी	केतु
योग	सौभाग्य
करण	वणिज
गण	राक्षस
योनि	मूषक
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	वनचर
वर्ग	मूषक
युँजा	मध्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	मू-मुकेश
पाया(राशि-नक्षत्र)	रजत - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कुम्भ

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1910	माघ	4
पंजाबी	संवत : 2045	माघ	12
बंगाली	सन् : 1395	माघ	10
तमिल	संवत : 2045	थई	11
केरल	कोल्लम : 1164	मकरम	11
नेपाली	संवत : 2045	माघ	11
चैत्रादि	संवत : 2045	माघ	कृष्ण 3
कार्तिकादि	संवत : 2045	पौष	कृष्ण 3

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 3
तिथि समाप्ति काल _____: 08:16:24
जन्म तिथि _____: 3
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: मघा
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 24:05:41 घंटे
जन्म योग _____: मघा
सूर्योदय कालीन योग ____: सौभाग्य
योग समाप्ति काल _____: 22:08:19 घंटे
जन्म योग _____: सौभाग्य
सूर्योदय कालीन करण ____: वणिज
करण समाप्ति काल _____: 19:07:18 घंटे
जन्म करण _____: वणिज
भयात _____: 34:54:30
भभोग _____: 66:18:43
भोग्य दशा काल _____: केतु 3 वर्ष 3 मा 18 दि

घात चक्र

मास _____: ज्येष्ठ
तिथि _____: 3-8-13
दिन _____: शनिवार
नक्षत्र _____: मूल
योग _____: धृति
करण _____: बव
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: मार्जार
लग्न _____: मीन
सूर्य _____: धनु
चन्द्र _____: मकर
मंगल _____: मकर
बुध _____: तुला
गुरु _____: कुम्भ
शुक्र _____: मीन
शनि _____: वृश्चिक
राहु _____: मेष

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

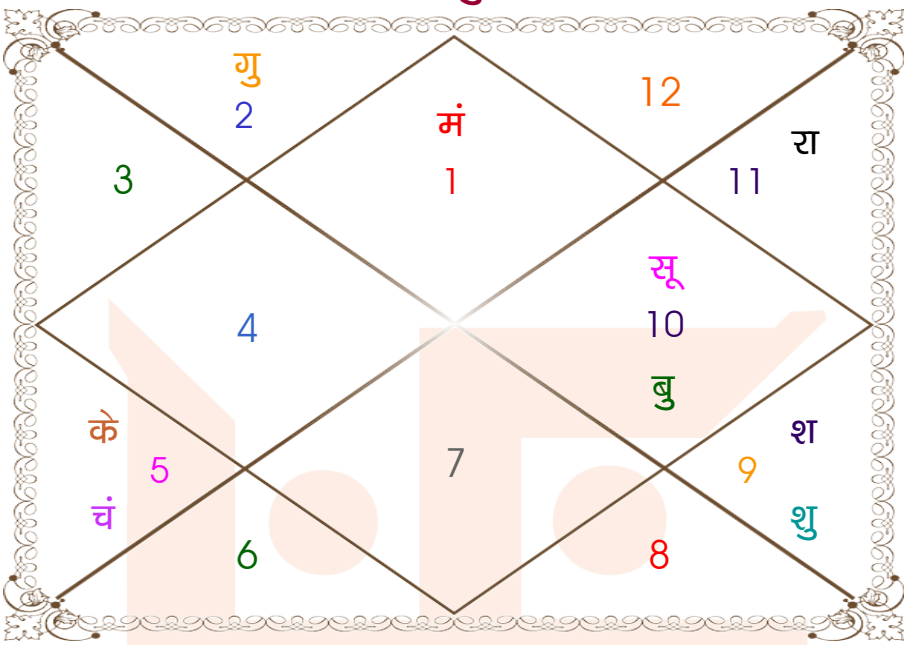

चन्द्र कुंडली

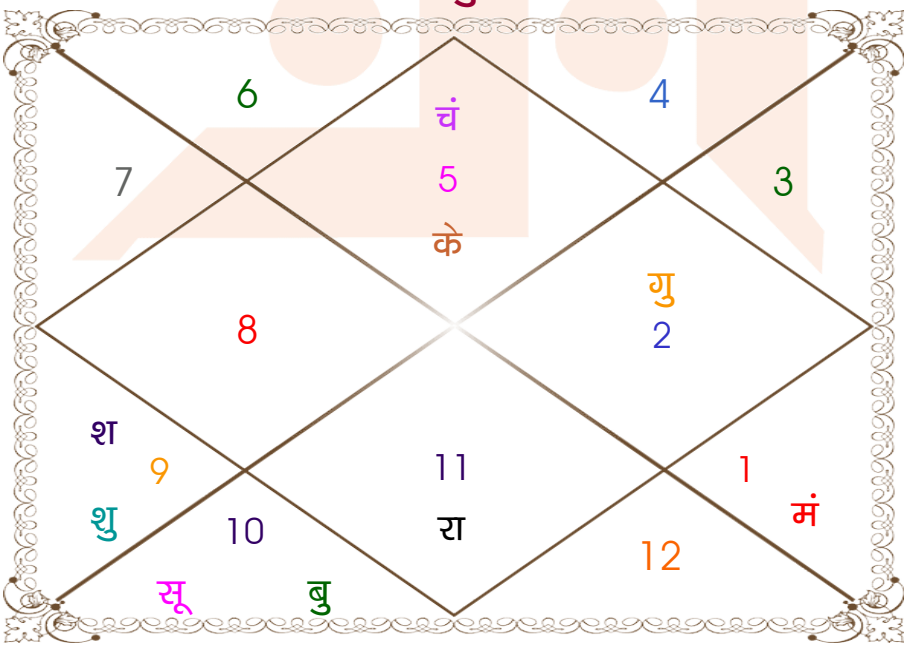

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

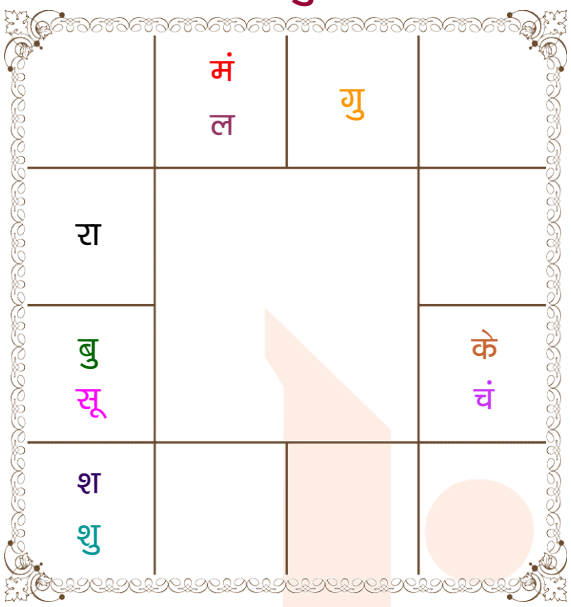

लग्न कुंडली

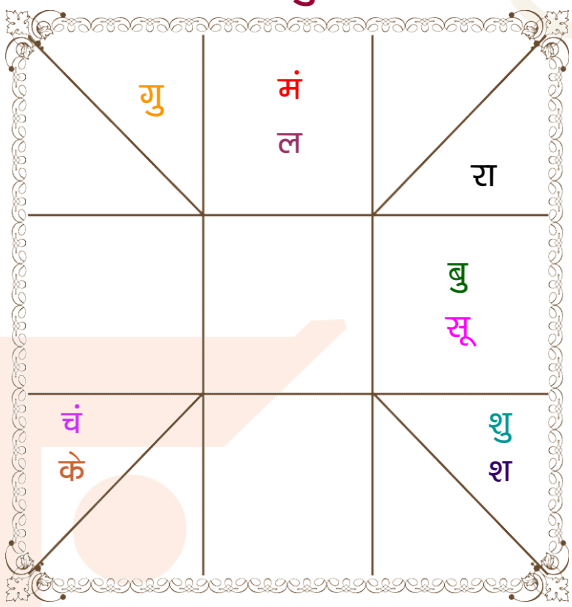

विंशोत्तरी
केतु 3वर्ष 3मा 18दि

केतु

24/01/1989

15/05/2105

केतु	14/05/1992
शुक्र	14/05/2012
सूर्य	14/05/2018
चन्द्र	14/05/2028
मंगल	15/05/2035
राहु	14/05/2053
गुरु	14/05/2069
शनि	14/05/2088
बुध	15/05/2105

योगिनी
भद्रिका 2वर्ष 4मा 9दि

भद्रिका

04/06/2022

04/06/2027

भद्रिका	13/02/2023
उल्का	14/12/2023
सिद्धा	03/12/2024
संकटा	13/01/2026
मंगला	05/03/2026
पिंगला	14/06/2026
धान्या	13/11/2026
भ्रामरी	04/06/2027

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मेष	15:02:18	443:43:25	भरणी	1	2	मंगल	शुक्र	शुक्र	---
सूर्य			मक	10:31:39	01:01:00	श्रवण	1	22	शनि	चंद्र	चंद्र	शत्रु राशि
चंद्र			सिंह	07:02:41	12:03:26	मघा	3	10	सूर्य	केतु	राहु	मित्र राशि
मंगल			मेष	09:02:35	00:33:51	अश्विनी	3	1	मंगल	केतु	गुरु	मूलत्रिकोण
बुध	व	अ	मक	12:15:01	01:14:58	श्रवण	1	22	शनि	चंद्र	राहु	सम राशि
गुरु			वृष	02:24:42	00:00:49	कृतिका	2	3	शुक्र	सूर्य	गुरु	शत्रु राशि
शुक्र			धनु	23:11:17	01:15:07	पूर्वाषाढ़ा	3	20	गुरु	शुक्र	शनि	सम राशि
शनि			धनु	14:33:48	00:06:37	पूर्वाषाढ़ा	1	20	गुरु	शुक्र	शुक्र	सम राशि
राहु	व		कुंभ	11:19:59	00:00:32	शतभिषा	2	24	शनि	राहु	शनि	मित्र राशि
केतु	व		सिंह	11:19:59	00:00:32	मघा	4	10	सूर्य	केतु	शनि	शत्रु राशि
हर्ष			धनु	09:22:56	00:03:14	मूल	3	19	गुरु	केतु	शनि	---
नेप			धनु	17:04:37	00:02:07	पूर्वाषाढ़ा	2	20	गुरु	शुक्र	चंद्र	---
प्लूटो			तुला	21:19:18	00:00:50	विशाखा	1	16	शुक्र	गुरु	गुरु	---
दशम भाव			मक	03:29:44	--	उत्तराषाढ़ा	--	21	शनि	सूर्य	शनि	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:42:24

लग्न-चलित

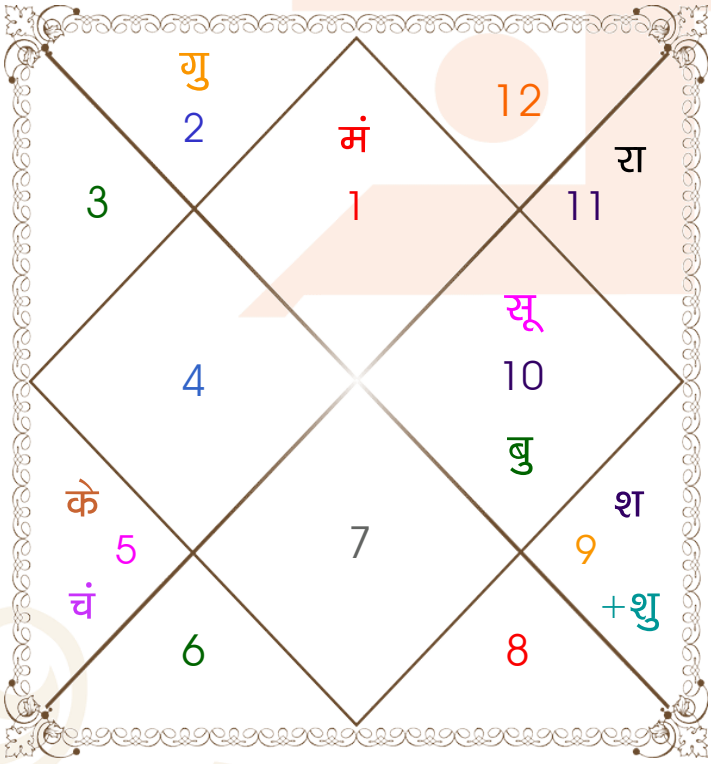

चन्द्र कुंडली

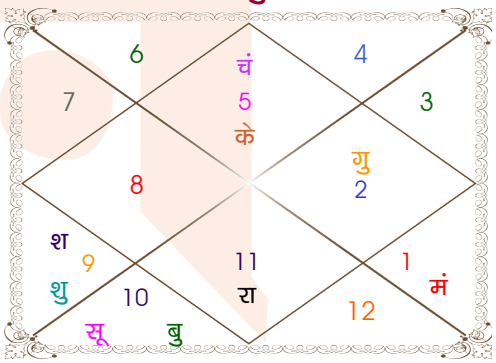

नवमांश कुंडली

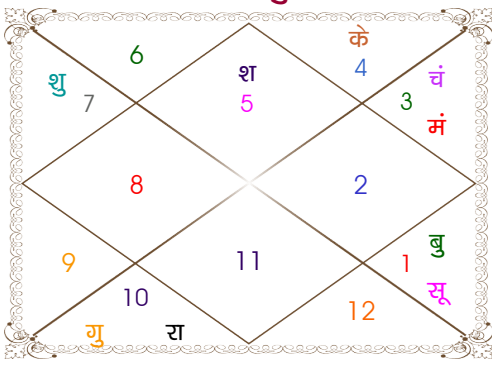

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र

लाइन तलाव रांची झारखंड

9835195382

9835195382

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	मीन	28:06:53	मेष	15:02:18
2	मेष	28:06:53	वृष	11:11:27
3	वृष	24:16:01	मिथुन	07:20:36
4	मिथुन	20:25:10	कर्क	03:29:44
5	कर्क	20:25:10	सिंह	07:20:36
6	सिंह	24:16:01	कन्या	11:11:27
7	कन्या	28:06:53	तुला	15:02:18
8	तुला	28:06:53	वृश्चिक	11:11:27
9	वृश्चिक	24:16:01	धनु	07:20:36
10	धनु	20:25:10	मकर	03:29:44
11	मकर	20:25:10	कुम्भ	07:20:36
12	कुम्भ	24:16:01	मीन	11:11:27

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मेष	15:02:18
2	वृष	14:39:14
3	मिथुन	09:17:20
4	कर्क	03:29:44
5	सिंह	01:05:36
6	कन्या	05:21:15
7	तुला	15:02:18
8	वृश्चिक	14:39:14
9	धनु	09:17:20
10	मकर	03:29:44
11	कुम्भ	01:05:36
12	मीन	05:21:15

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती
अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा

चलित कुंडली

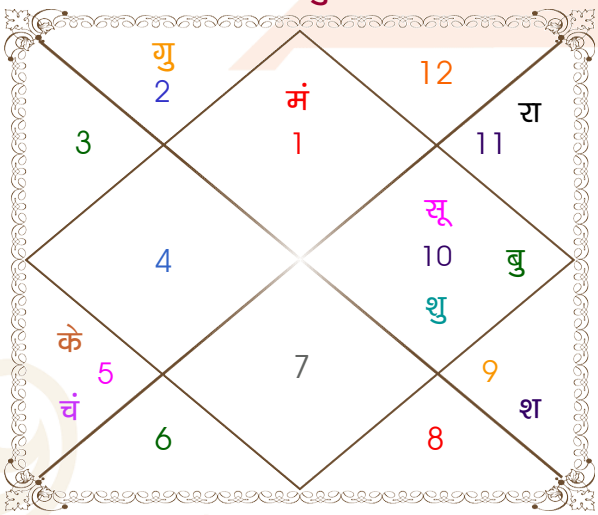

भाव कुंडली

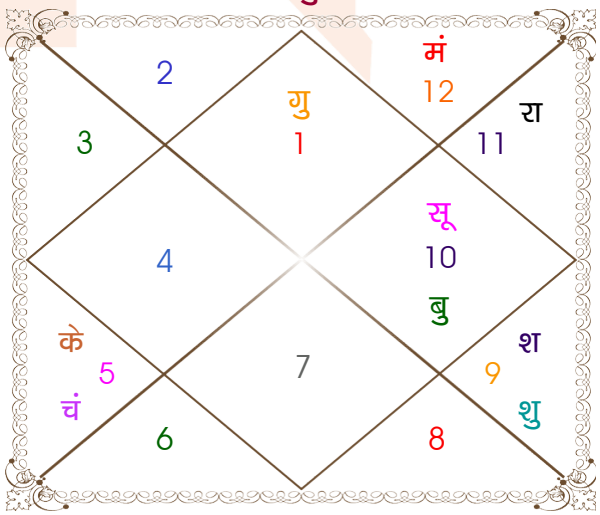

ज्योतिष ग्रह रत्न् केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र
लाइन तलाव रांची झारखंड
9835195382
9835195382

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : केतु 3 वर्ष 3 मास 18 दिन

केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष	
24/01/1989		14/05/1992		14/05/2012		14/05/2018		14/05/2028	
14/05/1992		14/05/2012		14/05/2018		14/05/2028		15/05/2035	
	00/00/0000	शुक्र	13/09/1995	सूर्य	31/08/2012	चंद्र	15/03/2019	मंगल	10/10/2028
	00/00/0000	सूर्य	13/09/1996	चंद्र	02/03/2013	मंगल	14/10/2019	राहु	29/10/2029
	00/00/0000	चंद्र	14/05/1998	मंगल	08/07/2013	राहु	14/04/2021	गुरु	04/10/2030
	00/00/0000	मंगल	14/07/1999	राहु	02/06/2014	गुरु	14/08/2022	शनि	13/11/2031
	24/01/1989	राहु	14/07/2002	गुरु	21/03/2015	शनि	14/03/2024	बुध	09/11/2032
राहु	02/05/1989	गुरु	14/03/2005	शनि	02/03/2016	बुध	13/08/2025	केतु	08/04/2033
गुरु	08/04/1990	शनि	14/05/2008	बुध	06/01/2017	केतु	14/03/2026	शुक्र	08/06/2034
शनि	18/05/1991	बुध	15/03/2011	केतु	14/05/2017	शुक्र	13/11/2027	सूर्य	14/10/2034
बुध	14/05/1992	केतु	14/05/2012	शुक्र	14/05/2018	सूर्य	14/05/2028	चंद्र	15/05/2035

राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष	
15/05/2035		14/05/2053		14/05/2069		14/05/2088		15/05/2105	
14/05/2053		14/05/2069		14/05/2088		15/05/2105		00/00/0000	
राहु	25/01/2038	गुरु	02/07/2055	शनि	17/05/2072	बुध	11/10/2090	केतु	11/10/2105
गुरु	19/06/2040	शनि	13/01/2058	बुध	25/01/2075	केतु	08/10/2091	शुक्र	11/12/2106
शनि	26/04/2043	बुध	20/04/2060	केतु	05/03/2076	शुक्र	08/08/2094	सूर्य	18/04/2107
बुध	13/11/2045	केतु	26/03/2061	शुक्र	05/05/2079	सूर्य	14/06/2095	चंद्र	17/11/2107
केतु	01/12/2046	शुक्र	25/11/2063	सूर्य	16/04/2080	चंद्र	12/11/2096	मंगल	14/04/2108
शुक्र	01/12/2049	सूर्य	13/09/2064	चंद्र	16/11/2081	मंगल	10/11/2097	राहु	25/01/2109
सूर्य	26/10/2050	चंद्र	13/01/2066	मंगल	26/12/2082	राहु	30/05/2100		00/00/0000
चंद्र	26/04/2052	मंगल	20/12/2066	राहु	01/11/2085	गुरु	05/09/2102		00/00/0000
मंगल	14/05/2053	राहु	14/05/2069	गुरु	14/05/2088	शनि	15/05/2105		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल केतु 3 वर्ष 3 मा 23 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र		चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु	
13/08/2025		14/03/2026		13/11/2027		14/05/2028		10/10/2028	
14/03/2026		13/11/2027		14/05/2028		10/10/2028		29/10/2029	
केतु	26/08/2025	शुक्र	24/06/2026	सूर्य	22/11/2027	मंगल	23/05/2028	राहु	07/12/2028
शुक्र	30/09/2025	सूर्य	24/07/2026	चंद्र	08/12/2027	राहु	14/06/2028	गुरु	27/01/2029
सूर्य	11/10/2025	चंद्र	13/09/2026	मंगल	18/12/2027	गुरु	04/07/2028	शनि	28/03/2029
चंद्र	29/10/2025	मंगल	19/10/2026	राहु	15/01/2028	शनि	27/07/2028	बुध	22/05/2029
मंगल	10/11/2025	राहु	18/01/2027	गुरु	08/02/2028	बुध	18/08/2028	केतु	13/06/2029
राहु	12/12/2025	गुरु	09/04/2027	शनि	08/03/2028	केतु	26/08/2028	शुक्र	16/08/2029
गुरु	10/01/2026	शनि	14/07/2027	बुध	03/04/2028	शुक्र	20/09/2028	सूर्य	04/09/2029
शनि	12/02/2026	बुध	09/10/2027	केतु	13/04/2028	सूर्य	28/09/2028	चंद्र	06/10/2029
बुध	14/03/2026	केतु	13/11/2027	शुक्र	14/05/2028	चंद्र	10/10/2028	मंगल	29/10/2029

मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र	
29/10/2029		04/10/2030		13/11/2031		09/11/2032		08/04/2033	
04/10/2030		13/11/2031		09/11/2032		08/04/2033		08/06/2034	
गुरु	13/12/2029	शनि	08/12/2030	बुध	04/01/2032	केतु	18/11/2032	शुक्र	18/06/2033
शनि	05/02/2030	बुध	03/02/2031	केतु	25/01/2032	शुक्र	13/12/2032	सूर्य	09/07/2033
बुध	25/03/2030	केतु	26/02/2031	शुक्र	25/03/2032	सूर्य	20/12/2032	चंद्र	13/08/2033
केतु	14/04/2030	शुक्र	05/05/2031	सूर्य	12/04/2032	चंद्र	02/01/2033	मंगल	07/09/2033
शुक्र	10/06/2030	सूर्य	25/05/2031	चंद्र	12/05/2032	मंगल	11/01/2033	राहु	10/11/2033
सूर्य	27/06/2030	चंद्र	28/06/2031	मंगल	02/06/2032	राहु	02/02/2033	गुरु	06/01/2034
चंद्र	25/07/2030	मंगल	22/07/2031	राहु	27/07/2032	गुरु	22/02/2033	शनि	14/03/2034
मंगल	14/08/2030	राहु	20/09/2031	गुरु	13/09/2032	शनि	17/03/2033	बुध	14/05/2034
राहु	04/10/2030	गुरु	13/11/2031	शनि	09/11/2032	बुध	08/04/2033	केतु	08/06/2034

मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र		राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि	
08/06/2034		14/10/2034		15/05/2035		25/01/2038		19/06/2040	
14/10/2034		15/05/2035		25/01/2038		19/06/2040		26/04/2043	
सूर्य	14/06/2034	चंद्र	31/10/2034	राहु	10/10/2035	गुरु	22/05/2038	शनि	01/12/2040
चंद्र	25/06/2034	मंगल	13/11/2034	गुरु	18/02/2036	शनि	07/10/2038	बुध	28/04/2041
मंगल	02/07/2034	राहु	15/12/2034	शनि	23/07/2036	बुध	09/02/2039	केतु	27/06/2041
राहु	21/07/2034	गुरु	12/01/2035	बुध	10/12/2036	केतु	01/04/2039	शुक्र	18/12/2041
गुरु	07/08/2034	शनि	15/02/2035	केतु	05/02/2037	शुक्र	25/08/2039	सूर्य	08/02/2042
शनि	28/08/2034	बुध	17/03/2035	शुक्र	20/07/2037	सूर्य	08/10/2039	चंद्र	06/05/2042
बुध	15/09/2034	केतु	29/03/2035	सूर्य	07/09/2037	चंद्र	20/12/2039	मंगल	05/07/2042
केतु	22/09/2034	शुक्र	04/05/2035	चंद्र	28/11/2037	मंगल	09/02/2040	राहु	09/12/2042
शुक्र	14/10/2034	सूर्य	15/05/2035	मंगल	25/01/2038	राहु	19/06/2040	गुरु	26/04/2043

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	6
भाग्यांक	7
मित्र अंक	3, 4, 6, 9, 7
शत्रु अंक	1, 8
शुभ वर्ष	24,33,42,51,60
शुभ दिन	गुरु, रवि, मंगल
शुभ ग्रह	गुरु, सूर्य, मंगल
मित्र राशि	वृश्चिक, मेष
मित्र लग्न	कर्क, धनु, कुम्भ
अनुकूल देवता	सूर्य
शुभ रत्न	मूंगा
शुभ उपरत्न	संगमूंगी
भाग्य रत्न	पुखराज
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	रक्त
शुभ दिशा	दक्षिण
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन
दान अन्न	मल्का
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
माणिक्य	सूर्य	89%	व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख
मूंगा	मंगल	83%	स्वास्थ्य, दुर्घटना से बचाव
पुखराज	गुरु	81%	धन, भाग्योदय, कम खर्च
मोती	चंद्र	78%	सन्तति सुख, सुख
नीलम	शनि	77%	भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति, धनार्जन
गोमेद	राहु	73%	धनार्जन, भाग्योदय
लहसुनिया	केतु	72%	सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति
हीरा	शुक्र	58%	भाग्योदय, धन, दम्पति
पन्ना	बुध	41%	व्यावसायिक हानि, पराक्रम हानि, शत्रु व रोग

रत्न की शुभता

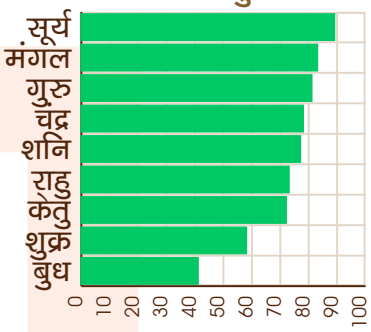

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
केतु	14/05/1992	77%	66%	89%	41%	81%	64%	64%	61%	84%
शुक्र	14/05/2012	77%	66%	83%	52%	81%	70%	83%	80%	78%
सूर्य	14/05/2018	100%	84%	89%	41%	88%	41%	64%	61%	59%
चंद्र	14/05/2028	95%	91%	83%	52%	81%	58%	77%	61%	59%
मंगल	15/05/2035	95%	84%	96%	16%	88%	58%	77%	61%	78%
राहु	14/05/2053	77%	66%	71%	41%	81%	64%	83%	86%	59%
गुरु	14/05/2069	95%	84%	89%	16%	94%	41%	77%	73%	72%
शनि	14/05/2088	77%	66%	71%	52%	81%	64%	89%	80%	59%
बुध	15/05/2105	95%	66%	83%	58%	81%	64%	77%	73%	72%

9835195382

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007
साढेसाती द्वितीय ढैया	01/11/2006-10/01/2007	16/07/2007-10/09/2009	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	----------

द्वितीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	----------

तृतीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
साढेसाती द्वितीय ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	30/08/2068-04/11/2070	----------	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	अशुभ	कम खर्च
साढेसाती प्रथम ढैया	अशुभ	सुख हानि
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	सन्तति कष्ट
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	शत्रु व रोग
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	दुर्घटना

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपके जन्म समय में मंगल लग्न में स्थित है। अतः जन्मकुण्डली के अनुसार आप मांगलिक हैं परन्तु शास्त्रानुसार आपके मंगली दोष का प्रभाव समाप्त हो जाता है। अतः ऐसे मंगल से आपको शुभ फलों की प्राप्ति अधिक मात्रा में होगी तथा अशुभ फलों का प्रभाव जीवन में अल्प ही रहेगा। इस प्रकार आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं शरीर में दुर्बलता का अभाव रहेगा। परन्तु यदा कदा आपके स्वभाव में क्रोध के भाव की प्रबलता भी दृष्टि गोचर होगी। मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में थोड़ा विलम्ब तो हो सकता है परन्तु विवाह प्रक्रिया अत्यन्त ही सुखद वातावरण में सम्पन्न होगी। आपको अनावश्यक समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ेगा परन्तु विवाहोपरान्त यदा कदा पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित होगा। फलतः कभी कभी वे शारीरिक रूप से अस्वस्थता की अनुभूति कर सकती हैं।

आपकी कुंडली में लग्न में स्थित मंगल की दृष्टि सुख भाव पर होने से आप जीवन में आवश्यक सुखोपभोग के संसाधनों को प्राप्त करने में सफल रहेंगे परन्तु इसमें आपको परिश्रम अधिक मात्रा में करना पड़ेगा। सप्तम भाव पर भी मंगल की पूर्ण दृष्टि होने से दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा। समय समय पर आपसी असहमति के कारण वाद विवाद भी होते रहेंगे फलस्वरूप परस्पर प्रेम पूर्ण संबंधों में अल्प समय के लिए तनाव उत्पन्न होगा। इसके साथ ही मंगल की दृष्टि अष्टम भाव पर भी पड़ती है अतः शारीरिक कुशलता पूर्ण रूप से रहेगी। कभी कभी अनावश्यक विघ्न बाधाएं कार्यों में व्यवधान उत्पन्न करेंगी जिससे आप मानसिक रूप से उद्विग्नता की अनुभूति करेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सुख एवं शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा तथा जीवन में आप पूर्ण रूप से सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे। अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखद एवं शुभ बनाने के लिए तथा मंगल के प्रभाव को और अधिक अनुकूल करने के लिए आपको किसी गैरमांगलिक कन्या का या ऐसी मंगली कन्या जिसका शास्त्रानुसार उचित रूप से मंगल का दोष भंग हो रहा हो उससे विवाह का प्रस्ताव करना चाहिए। इस प्रकार

समस्त दोषों का निवारण करके यदि आप अपने दाम्पत्य जीवन को प्रारम्भ करेंगे तो इससे आपका जीवन अत्यन्त ही सुखमय एवं आनन्द पूर्वक व्यतीत होगा। साथ ही जीवन में समस्त आवश्यक सुख साधनों की इच्छित प्राप्ति होगी एवं आर्थिक क्षेत्र में भी पूर्ण रूप से सुदृढ़ता रहेगी तथा धन धान्य एवं ऐश्वर्य से सर्वदा सुशोभित रहेंगे। आप एक सौभाग्य शाली पुरुष होंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को अपने भाग्यबल एवं आवश्यक परिश्रम से सफल बना कर दाम्पत्य जीवन को शान्ति एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करेंगे। इसके अतिरिक्त जिस कन्या की कुंडली में मंगल की स्थिति प्रथम भाव में हो तो ऐसी कन्या के साथ दाम्पत्य जीवन का प्रारम्भ नहीं करना चाहिए क्योंकि प्रथम भावस्थ मंगल की स्थिति से कन्या का शारीरिक स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा जिससे सांसारिक तथा सामाजिक कार्यों को सम्पन्न करने में अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न होंगी एवं दाम्पत्य सुख में भी व्यवधान उत्पन्न होंगे अतः सुखी दाम्पत्य जीवन के लिए इसकी यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए। इसके साथ ही कुंडली मिलान के समय में पूर्ण सावधनी रखनी चाहिए तथा सतर्कतापूर्वक अन्तिम निष्कर्ष लेना चाहिए जिससे भावी दाम्पत्य जीवन में किसी भी प्रकार की अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न न हों एवं जीवन सुख एवं शान्तिपूर्वक व्यतीत हो सके।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- चन्द्र पंचम् भाव में स्थित है तथा उस पर राहु का प्रभाव है।

आपकी कुडली में चन्द्र के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी "ॐ नमः शिवाय" का मंत्र जाप करें। दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें। ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

दशमभाव में सूर्य हो तो जातक-प्रतापी, व्यवसाय कुशल, राजमान्य लब्ध-प्रतिष्ठ, राजमन्त्री, उदार, ऐश्वर्य सम्पन्न एवं लोकमान्य होता है।

मकर राशि में रवि हो तो जातक बहुभाषी, चंचल, झगड़ालू, दुराचारी, लोभी एवं परिश्रमी होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन के अधिकांश महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपकी उन्नति के लिए अपना पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही व्यापार तथा आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहयोग से आप सफलता अर्जित कर सकेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु वे शीघ्र ही समाप्त हो जाएंगे। इसके साथ ही आप जीवन में उनको आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में उनको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगे।

चन्द्र

पंचमभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सदाचारी, कन्यासन्ततिवान्, चंचल सट्टे से धन कमानेवाला एवं क्षमाशील होता है।

सिंह राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दृढ़देही, दाँत तथा पेट का रोगी, मातृभक्त, अल्पसन्ततिवान्, गम्भीर, दानी, साहसी, शान दिखाने वाला अभिमानी, महत्वाकांक्षी एवं पुराने विचारों वाला होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति पंचम भाव में हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपके शुभ प्रभाव से वे धन सम्पत्ति आदि को भी प्राप्त करेंगी तथा इससे प्रायः युक्त ही रहेंगी। साथ ही जीवन में आपको हमेशा कला, नीति, विद्या आदि के लिए प्रोत्साहित करेंगी एवं यत्नपूर्वक इसमें अपना सहयोग भी प्रदान करेंगी। आप की संतति से भी उनका प्रेम रहेगा एवं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आपको सहयोग प्रदान करेंगी।

आप भी उनके प्रिय रहेंगे तथा उनकी आज्ञापालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही आपके आपसी संबंध भी मधुरता से युक्त रहेंगे एवं आपसी भेदभाव भी अल्प मात्रा में होंगे। जीवन में आप यत्नपूर्वक उनकी सेवा तथा अन्य वांछित सहयोग एवं सहायता प्रदान करने के लिए भी सर्वदा उद्यत रहेंगे इस प्रकार आप आपस में प्रसन्नतापूर्वक रहेंगे।

मंगल

लग्न (प्रथम) में मंगल हो तो जातक, चपल, क्रूर, महत्वाकांक्षी, विचार रहित, गुप्तरोगी, उतावला, लौहधातु एवं व्रणजन्य, कष्ट से युक्त, व्यवसायहानि, दुर्घटना की सम्भावना, दुःखी, निर्धन एवं साहसी होता है।

मेष राशि में मंगल हो तो जातक सत्यवक्ता, तेजस्वी, शूरवीर, नेता, साहसी, धनवान्, लोकमान्य, दानी एवं राजमान्य होता है।

आपके जन्म काल में मंगल प्रथम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता उनमें परिलक्षित होगी। धन धान्य से वे प्रायः सुसम्पन्न ही दौरान आपकी- प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में आपको प्रायः अपना आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से चाहेंगे तथा उनकी वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर ही होंगे परन्तु यदा कदा मतभेद के कारण संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा लेकिन यह अल्प समय के लिए ही रहेगा उसके बाद सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इस प्रकार मध्यम रूप से आप एक दूसरे का परस्पर सहयोग करते रहेंगे।

बुध

दशमभाव में बुध हो तो जातक सत्यवादी, मनस्वी, व्यवहार कुशल, लोकमान्य, विद्वान, लेखक, कवि जमींदार, मातृ-पितृ भक्त, राजमान्य, न्यायी एवं भाग्यवान् होता है।

मकर राशि में बुध हो तो जातक कुलहीन, दुश्शील, मिथ्याभाषी, ऋणी, मूर्ख, डरपोक, व्यापार में रुचि लेने वाला, किफायतसार, चतुर एवं परिश्रमी होता है।

गुरु

द्वितीयभाव में गुरु हो तो जातक मधुरभाषी, सम्पत्ति और सन्ततिवान्, सुन्दरशरीर, सदाचारी, पुण्यात्मा, सुकार्यरत, लोकमान्य, राज्यमान्य, व्यवसायी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं भाग्यवान् होता है।

वृष राशि में गुरु हो तो जातक पुष्टशरीर वाला, सदाचारी, धनवान्, आस्तिक, चिकित्सक, विद्वान, बुद्धिमान्, जीवन में स्थिरता, दृढ़विचार, दिखावा करने वाला एवं कामुक होता है।

शुक्र

नवम भाव में शुक्र हो तो जातक धर्मात्मा, राजप्रिय, पवित्रतीर्थ यात्राओं का कर्ता,

दयालु, प्रेमी, गृहसुखी, गुणी, चतुर एवं आस्तिक होता है।

धनु राशि में शुक्र हो तो जातक धनी, बलशाली, स्वोपार्जित द्रव्य द्वारा पुण्य करने वाला, विद्वान, सुन्दर, लोकमान्य, राज्यमान्य, सुखी घरेलू जीवन, उच्चपद की प्राप्ति एवं प्रभावशाली होता है।

शनि

नवम भाव मे शनि हो तो जातक धर्मात्मा, साहसी, प्रवासी, कृशदेही, भीरु, भ्रातृहीन, शत्रुनाशक रोगी वातरोगी, भ्रमणशील एवं वाचाल होता है।

धनु राशि में शनि हो तो जातक व्यवहारज्ञ, पुत्र की कीर्ति से प्रसिद्ध सदाचारी, वृद्धावस्था में सुखी, सक्रिय, चतुर शान्तिप्रिय, दुःखी विवाहित जीवन एवं धनी होता है।

राहु

ग्यारहवें भाव में राहु हो तो जातक परिश्रमी, अल्पसन्तान, विदेशियों से धनलाभ, दीर्घायु, मन्दमति, लाभहीन, अरिष्टनाशक, व्यवसाययुक्त, कदाचित् लाभदायक एवं कार्य सफल करने वाला होता है।

कुम्भ राशि में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।

केतु

पंचम भाव में केतु हो तो जातक वातरोगी, कुचाली, कुबुद्धि, सन्तान को नष्ट करता है, योगी, कुशाग्रबुद्धि एवं क्रोधी होता है।

सिंह राशि में केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, सर्पदशन का भय एवं असन्तोषी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :– चन्द्र
(14/05/2018 - 14/05/2028)

चन्द्र की महादशा की अवधि दस वर्षों की है। आपकी कुण्डली में यह 14/05/2018 को आरम्भ और 14/05/2028 को समाप्त होगी।

चंद्र पंचम भाव में अवस्थित है। पंचम भाव संपत्ति, आनन्द, मनोरंजन, मनोविनोद, विश्राम, वर्ग पहेली, जुआबाजी आदि प्रतियोगी गतिविधियों, लॉटरी प्रेम, उच्च शिक्षा और ज्ञान, अकूत सम्पत्ति तथा आध्यात्मिक गतिविधियों का द्योतक है। अतः यह अवधि आपके लिये आनंद दायक होगी और आपको समृद्धि तथा शांति की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी की त्रिकोण में स्थिति के कारण आपका जीवन उत्तम होगा। इस अवधि में किसी बड़े रोग अथवा दुर्घटना की सम्भावना नहीं है और आप सामान्य जीवन का आनन्द लेने में सक्षम होंगे तथा अपने दैनिक कर्त्तव्यों का नियमित रूप से बिना किसी रुकावट के सम्पादन करेंगे।

अर्थ और सम्पत्ति :

अर्थ की दृष्टि से यह दशा अनुकूल होगी जब पंचम भाव में अवस्थित महादशा के स्वामी की एकादश भाव पर दृष्टि होगी। इस अवधि में आपकी चल-अचल सम्पत्ति में वृद्धि होने की संभावना है। आपकी आय में वृद्धि होगी और आप सुख-साधनों पर व्यय करने की स्थिति को प्राप्त करेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

व्यवसाय :

आप निष्कपट, सत्यवादी, भद्र तथा ईश्वर से भयभीत रहने वाले हैं इसलिए आपको सरकारी पद, राज्य की सेवा के अवसर की प्राप्ति होगी। आपकी प्रतिष्ठा और स्थिति से समाज के अन्य लोगों को ईर्ष्या होगी और आपका कोई शत्रु नहीं होगा। सट्टे की ओर प्रवृत्ति के संकेत भी हैं जिसमें आपको लाभ मिलेंगे।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन सौहार्द्रपूर्ण और आनन्ददायक होगा। आपके जीवन साथी सहयोगी और सहायक होंगे तथा बच्चे आज्ञाकारी होंगे। संभव है आपका कोई बेटा अपने क्षेत्र में प्रसिद्ध होगा और परिवार को प्रसिद्धि दिलाएगा। आपका मस्तिष्क साफ रहेगा और बच्चों से आपको सुख की प्राप्ति होगी।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

धर्मग्रन्थों और अन्य पुराणों के अध्ययन में आपकी प्रवृत्ति होगी।

अंर्तदशा :- चन्द्र - बुध
(14/03/2024 - 13/08/2025)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा 1 वर्ष 5 मास रहेगी।

आपके लिए चंद्र महादशा 14/05/2018 को प्रारंभ हुई थी और 14/05/2028 को समाप्त होगी। इसमें बुध की अंतर्दशा 14/03/2024 को प्रारंभ होकर 13/08/2025 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्रिका के दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है। दशम भाव में स्थित होकर बुध कुंडली के चतुर्थ भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व पर प्रभावी हो रहा है। इस अंतर्दशा की अवधि में आप शिक्षा-दीक्षा में उत्तम प्रगति करेंगे। आपको प्रसिद्धि और प्रसन्नता प्राप्त होंगी। दान-धर्म में रुचि होगी। व्यापार में उन्नति होगी। अध्यात्म में दिलचस्पी बढ़ेगी। हर कार्य में सफलता मिलेगी। नेत्रों के रोगों से बचाव करें।

शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध के वैदिक मंत्र के 9000 जाप करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - केतु
(13/08/2025 - 14/03/2026)

चंद्रमा की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इसके अंतर्गत केतु अंतर्दशा 7 मास की रहेगी। आपके लिए चंद्र महादशा 14/05/2018 को प्रारंभ हुई ओर 14/05/2028 को समाप्त होगी। केतु अंतर्दशा 13/08/2025 को प्रारंभ होकर 14/03/2026 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका के पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर-सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे-बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। पंचम भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के एकादश भाव पर दृष्टि द्वारा अपना प्रभाव डाल रहा है।

इस अवधि में आपको विचित्र भावनात्मक अनुभव हो सकते हैं। बहुत सावधानी की आवश्यकता है। हो सकता है घर के सदस्यों और संबंधियों के प्रति आपकी आपकी भावनाओं में कुछ परिवर्तन हो जाए। उदर रोगों से बचाव करें और खान-पान पर नियंत्रण रखें।

आपकी अध्यात्म में रुचि बढ़ेगी।

अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करें :

1. श्वान को भोजन दें।
2. घर पर भूरा श्वान पालें।
3. गरीबों को मंदिर में कंबल बांटें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - शुक्र
(14/03/2026 - 13/11/2027)

चंद्र की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 14/05/2018 को प्रारंभ होकर 14/05/2028को समाप्त होगी।

इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 14/03/2026 को प्रारंभ होकर 13/11/2027 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्रिका के नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है।

इस अवधि में आप आप प्रसिद्धि, ज्ञान और सुख प्राप्त करेंगे। आपकी वाणी नीति और मधुरता से युक्त रहेगी। विभिन्न विषयों पर आपके विचारों की सराहना होगी। विपरीत लिंग के व्यक्तियों से विवाद न करें, अन्यथा धनहानि हो सकती है।

अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करें।

1. चींटियों को शक्कर और आटा दें :
2. कन्याओं को खीर खिलाएं।
3. भोजन से पहली चपाती निकालकर गाय को दें।
4. लक्ष्मीजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :- चन्द्र - सूर्य
(13/11/2027 - 14/05/2028)

चंद्रमा की महादशा की अवधि 10 वर्ष होगी। आपके लिए यह 14/05/2018 को प्रारंभ होगी और 14/05/2028 को समाप्त होगी।

इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 6 मास होगी जो आपके लिए 13/11/2027 से प्रारंभ होकर 14/05/2028 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्रिका में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान, जांघों का परिचायक है। सूर्य एक शक्तिशाली ग्रह है और पिता व आत्मा का कारक है।

इस अवधि में आप सभी कार्यों में सफल रहेंगे। धन और विद्या का आगमन और संचय होगा। आप बली और प्रसन्न होंगे। वाहन सुख रहेगा, बुद्धि बलवती होगी, उच्चपद की प्राप्ति होगी। पुरखों की जायदाद भी मिल सकती है। आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा, संगीत में रुचि होगी और लोकप्रियता बढ़ेगी।

सूर्य के शुभत्व में वृद्धि के लिए सूर्य के वैदिक मंत्र का जाप प्रातःकाल, अगर संभव

महादशा :- मंगल
(14/05/2028 - 15/05/2035)

मंगल की महादशा 14/05/2028 को आरम्भ तथा 15/05/2035 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष होगी। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल प्रथम भाव में अवथित है। अतः यह दशा आपके लिये भाग्यशाली और उत्तम होगी। इसके पूर्व आपकी 10 वर्षो की चन्द्रदशा चल रही थी। आप को माता से लाभ और सम्पत्ति तथा वाहन की प्राप्ति होगी। इस दशा में आपको शुभ फल मिलते रहेंगे। आपको यश, प्रतिष्ठा, उत्तम स्वास्थ्य तथा कार्यों में सफलता की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपको ऊर्जा तथा जीवन शक्ति की प्राप्ति होगी। आप अपने सारे कार्यों का पूरे उत्साह से सम्पादन करेंगे। इस दशा के दौरान आप आत्मविश्वासी और हठधर्मी होंगे और अपनी प्रशासनिक क्षमता का प्रदर्शन करेंगे। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि के कारण आपके जीवन साथी को कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सम्मान करना पड़ सकता है। आप सरदर्द, हृदय-रोग या पित्त-दोष से पीड़ित हो सकते है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपको अपने सभी कार्यों में सफलता मिलेगी। यदि आप प्रशासनिक सेवा में हैं तो इस दशा में बहुत अच्छा करेंगे। आप सुर्खियों में रहेंगे और आपको यश और प्रसिद्धि की प्राप्ति होगी। व्यवसाय तथा व्यापार में लाभ में वृद्धि होगी। आपको अप्रत्याशित धन की प्राप्ति हो सकती है। नौकरीपेशा लोगों का स्थानांतरण या परिवर्तन हो सकता है जो लाभदायक होगा। मुकदमें में विजय होगी। आप सैन्य सेवा, अभियन्त्रण, शल्य चिकित्सा या लौह-इस्पात उद्योग से सम्बद्ध व्यवसाय का चयन अपनी जीविका के लिये कर सकते हैं। आप योजना-कार्य या प्रशासनिक कार्यों का सम्पादन अति सुन्दर ढंग से कर सकते हैं। आप रसायन, सामुद्री उत्पाद, कुटीर-उद्योग आदि से संबंद्ध व्यापार कर सकते हैं। आप एक सफल दन्त चिकित्सक या शल्प चिकित्सक हो सकते हैं। आप तकनीकी अथवा कृषि से सम्बद्ध कार्यों में सफल होंगे।

सम्पत्ति, वाहन, यात्राएं :

आप न केवल स्वयं धन अर्जित करेंगे बल्कि आपको विरासत की भू-सम्पत्ति भी मिलेगी। अचानक अप्रत्याशित स्रोतों से सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। पैतृक सम्पत्ति, दाय, सेवा-निवृत्ति से लाभ, बोनस, ग्रेच्यूइटी आदि की प्राप्ति हो सकती हैं जो लाभदायक होंगी। साझेदारों या पैतृक सम्पत्ति से लाभ भी हो सकते हैं। इस दशा में आप अपने मकान का निर्माण कर सकते हैं या आपको किसी मकान की प्राप्ति हो सकती है।

शिक्षा :

इस अवधि में आप की शिक्षा उत्तम होगी और आप प्रगति करेंगे। आपको छात्रवृत्ति की प्राप्ति हो सकती है। आप प्रतियोगिता परीक्षाओं, वाद-विवादों और अन्य प्रतिस्पर्धाओं में

सफल होंगे। दृढ़ और आत्मविश्वासी होंगे तथा नेतृत्व गुणों का प्रदर्शन करेंगे। खेलों, विज्ञान तथा तकनीकी विषयों में आपकी रुचि होगी। आप एक गम्भीर छात्र होंगे-हमेशा सक्रिय, सावधान और प्रतियोगी। आप नेतृत्व करेंगे किन्तु किसी का अनुसरण नहीं करेंगे।

परिवार :

आपको परिवार से सुख मिलेगा। जीवन साथी के साथ सम्बन्धों में कभी-कभी तनाव हो सकता है। आपको हठधर्मिता का परित्याग करना चाहिए और परिवार में अच्छे सम्बन्ध बनाए रखना चाहिए। आपके बच्चों के लिए समय भाग्यशाली होगा और उनके साथ आपके संबंध मुधर होंगे। उनके भाग्य की उन्नति होगी और वे अपनी शिक्षा में अच्छा करेंगे। आपके मित्रों की संख्या विशाल होगी और आप सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहेंगे। आपकी माता के साथ आपके संबंध मधुर रहेंगे। उनका स्वास्थ्य थोड़ा प्रभावित होगा। आपके पिता को धन, समृद्धि, लाभ, यश, ख्याति आदि की प्राप्ति होगी। आपको उनके साथ मधुर संबंध रखना चाहिए। आप को उनसे लाभ मिल सकता है। आपके छोटे भाई-बहन भाग्यशाली होंगे और उन्हें धन की प्राप्ति होगी तथा आपके बड़े भाई-बहनों को प्रगति करने के लिए एक कठिन परिश्रम करना होगा और वे अपने कार्यों में सफल होंगे। उनके साथ आपके सम्बन्ध अच्छे होंगे।

अन्तर्दशा :

मंगल की अन्तर्दशा आरम्भ से ही लाभदायक होगी। आपके घर में शुभ कार्य होंगे, आपको बच्चों से खुशी मिलेगी तथा आपकी शक्ति व पराक्रम में वृद्धि होगी। राहु की अन्तर्दशा अशुभ हो सकती है और स्वास्थ्य-समस्याओं तथा आर्थिक नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। गुरु की अन्तर दशा में आपको बच्चों तथा बड़ों से सुख तथा तीर्थाटन के अवसर की प्राप्ति होगी और आध्यात्मिक कार्यों में आपकी रुचि होगी। दशम तथा एकादश भाव के स्वामी की अन्तर्दशा आपको व्यावसायिक सफलता तथा लाभ प्रदान करेगी। बुध की अन्तर्दशा के कारण आपकी शक्ति में कमी आएगी, असफल छोटी यात्राएँ होंगी और भाई-बहनों से कष्ट मिलेगा। केतु की अन्तर्दशा के कारण मानसिक समस्याओं और तनाव से सामना होगा। शुक्र की अन्तर्दशा के कारण आपको मानसिक तनाव होगा तथा पारिवारिक जीवन में संकट का सामना करना पड़ेगा। सूर्य की अन्तर्दशा आपके लिये समृद्धिशाली सिद्ध होगी और इस दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी और आप भाग्यशाली होंगे। चन्द्र की अन्तर्दशा के कारण आपको माता से लाभ होगा और भूमि और वाहन की प्राप्ति होगी।

अंर्तदशा :- मंगल - मंगल
(14/05/2028 - 10/10/2028)

आपके लिए मंगल की महादशा 14/05/2028 को प्रारंभ हुई है। इस महादशा के अंतर्गत प्रथम अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 14/05/2028 को प्रारंभ होकर 10/10/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल वीरता, साहस, अचल संपत्ति और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आप प्रतिद्वंद्विता में विजय के लिए बेचैन रहेंगे और आगे बढ़ते जाएंगे, मगर आपको क्रोध और उतावलेपन से बचना चाहिए। सेवा और तकनीकी कार्यो में सफल हो सकते हैं। विवाहित जीवन में तनाव हो सकता है; नीतिपूर्वक व्यवहार आवश्यक है। साझेदार से संबंध भी तनावपूर्ण हो सकते हैं। अचल संपत्ति और वाहन प्राप्त कर सकते हैं। विरासत में या जीवनसाथी के माध्यम से धन मिल सकता है।

आपके जीवनसाथी धनी और सशक्त बनेंगे। आपके पिता समृद्ध होंगे; निवेश में सफलता अर्जित करेंगे। माता को उच्चपद प्राप्त हो सकता है, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, तीर्थयात्राएं करेंगी। आपके अपने भाई-बहनों से संबंध उत्तम रहेंगे।

आपकी संतान को सफलता और प्रसिद्धि प्राप्त होगी। अगर वे सेवारत हैं तो लंबी यात्राएं हो सकती हैं, वांछित स्थान पर तबादला हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो परिवर्तन की संभावना है। परामर्शदाता नये कार्य की योजना बनाएंगे। व्यापारीगण नये कार्यों, विशेषकर लोहे, धातु, अग्नि संबंधी कार्यों में सफल हो सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मामूली चोट या बीमारी हो सकती है। अरिष्ट से बचाव के लिए मंगल के गायत्री मंत्र का जाप करें।

अंर्तदशा :- मंगल - राहु
(10/10/2028 - 29/10/2029)

आपके लिए मंगल की महादशा 14/05/2028 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा राहु की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी। आपके लिए यह 10/10/2028 को प्रारंभ होकर 29/10/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक लाभ, परिवर्तन और लंबी यात्राओं का कारक है।

इस अवधि में आपके पद और सम्मान में उन्नति होगी। आकांक्षाएं पूर्ण होंगी और भौतिक सुख उपलब्ध होंगे। बहुत से प्रभावशाली मित्र बनेंगे, वे आपके लिए लाभदायक रहेंगे। शिशु का जन्म हो सकता है। पहले किये निवेश से अब लाभ मिलेगा। सट्टेबाजी से भी धनार्जन हो सकता है। मनोरंजन के साधनों में कार्य कर सकते हैं या तकनीकी कार्यों से लाभ उठा सकते हैं।

आपके जीवनसाथी निवेश और सट्टेबाजी से धन कमा सकते हैं। आपके पिता को लक्ष्यप्राप्ति के लिए परिश्रम करना होगा। माता को स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। आपके भाई-बहनों की यात्रा हो सकती है, उनके सम्मान में वृद्धि होगी, विवाह हो सकता है।

आपकी संतान के जीवन पर अनुबंधों और साझेदारी का प्रभाव पड़ेगा। अगर वे कार्यरत हैं तो यात्रा हो सकती है, व्यापारिक गतिविधियां बढ़ सकती हैं, विवाह हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाता लाभ उठाएंगे, जबकि व्यापारी भाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा मगर कान, घुटनों और मांसपेशियों का ध्यान रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए उड़द की दाल, नीले वस्त्र और सतनजा दान दें।

अंर्तदशा :- मंगल - गुरु
(29/10/2029 - 04/10/2030)

आपकी मंगल की महादशा 14/05/2028 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 29/10/2029 को प्रारंभ होकर 04/10/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति विवेक, संतान और आध्यात्मिकता का कारक है।

इस अवधि में आप भाग्यशाली और प्रसन्न रहेंगे। खूब धन कमाएंगे। परिवार में सुख, उत्तम भोजन और वस्त्र उपलब्ध रहेंगे। आपकी मधुर वाणी से जनता प्रभावित होगी। विरासत या उपहार से धन मिल सकता है। प्रतिस्पर्धियों पर विजय मिलेगी।

नौकरी मिल सकती है। अदालत में सफलता मिलेगी। प्रोन्नति और कार्य में प्रगति का संकेत है। विशिष्ट व्यक्तियों से मित्रता बढ़ेगी।

आपके जीवनसाथी को अचानक अप्रत्याशित लाभ या परिवर्तन का संकेत है। आपके पिता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। माता सफल और धनी होंगी। आपके भाई-बहनों के लिए यात्रा, शत्रुओं पर विजय, अचल संपत्ति के क्रय, वांछित स्थान पर तबादले का योग है।

आपकी संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी, सम्मान में वृद्धि होगी, व्यापार में लाभ होगा, प्रोन्नति मिल सकती है।

अगर आप सेवारत हैं तो सम्मान और प्रोन्नति का संकेत है। परामर्शदाता सफल और धनी बनेंगे। व्यापारियों को अचानक धन या अचल संपत्ति का लाभ हो सकता है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। चेहरे और मुख की मामूली व्याधि संभव है। उत्तम भोजन के सेवन में अति न करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए ब्रह्माजी की उपासना करें।